Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2021, VOL- 8/63

प्रा. डॉ. अस्मिता नानोटी

संगीत विभाग प्रमुख, अशोक मोहरकर कला तथा वाणिज्य महाविद्यालय, अड्याळ, ता.—पवनी, जि—भंडारा. महाराष्ट्र

asmitananoti1303@gmail.com

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना—

समुचे विश्व में 'विविधता में एकता' ऐसी पहचान प्राप्त हमारा भारतवर्ष एक अनोखा राष्ट्र हैं। हमारा देश हमारी विविधता, प्रादेशिक संस्कृति तथा परंपरा का परिचायक हैं। विभिन्न भाषा, विभिन्न बोली, विभिन्न वेशभूषा, विभिन्न खानपान, विभिन्न त्यौहार, विभिन्न परंपरा तथा संस्कृती प्राचिनकाल से भारतवर्ष में एक दुसरेसे हात मिलाएँ हैं। यह विभिन्न परंपरा तथा संस्कृति के कारण प्रदेशानुसार विविध लोकसंगीत कैसे अछुते रह सकते हैं? पं. रामनरेश त्रिपाठीजी के अनुसार वसुंधरा पर मानव तथा गीत का प्रकटीकरण एकसाथ ही हुआ हैं। देशकाल तथा समयानुसार बोली, शैली के स्वरुप बदलते गए अपितु उनका वास्तविक स्वरुप मूल रुपमें आज भी विद्यमान हैं। पूर्व—पश्चिम—उत्तर—दक्षिण तथा पूर्वोत्तर भारत में विविध प्रकारका लोकसंगीत गाया जाता हैं। गायक, वादक तथा नृत्य कलाकारोंद्वारा पिढी दर पिढी लोकसंगीत विकसित होता गया।

महाराष्ट्र राज्य में बोली, शैली तथा परंपराओनुरुप असंख्य लोकसंगीत प्रचलित हैं। इन लोकगीतोंकें गायन, वादन तथा प्रस्तुतिकरण का एक अलगही ढंग हैं, जैसे—पोवाडा, लावणी, कोळीगीत (मछवारोंका गीत), तमाशा अंतर्गत वग—गण—गौळण गीत, भारुड, झिम्मा, फुगडी, हदगा, गोंधळ, छक्कड, ओवी, विडंबन गीत! यह सभी प्रकारके लोकसंगीत त्यौहार, लोकरंजन तथा प्रबोधन हेतू प्रसंगोपात्त प्रस्तुत होते हैं।

लोकसंगीत परिचय—

विभिन्न जन तथा जाती समुहद्वारा लोकरंजन तथा प्रबोधन हेतू प्रस्तुत होनेवाले संगीत को सामन्यरुपसे लोकसंगीत कहा जाता हैं। लोकसंगीत का कोई विशिष्ट निर्माता नहीं हैं ऐसी मान्यता हैं। संक्षेपत: लोक ही लोकसंगीत के निर्माता हैं। प्रारंभिक अवस्था में तत्कालीन जनसमुहोंद्वारा श्रमपरिहार तथा श्रमउपरांत जल्लोष करने हेतू लोकसंगीत का अविष्कार हुआ। शब्द, काव्य तथा ताल लोकसंगीत का आत्मा हैं। गीतों में प्रयुक्त भावनाओंको मधुरता तथा सुरसता प्रदान करने हेतु अनुकूल स्वरों का आधार लिया जाता हैं। निसर्ग में प्रवाहित होनेवाली नदी समान लोकसंगीत विविध मोड लेते हुए स्वयं ही स्वयंका मार्ग प्रशस्त करता हैं और हर प्राणीमात्र को मन ही मन

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मुदित करता हैं। लोकसंगीत सुगम तथा सुबोध होने के कारण आवश्यक वाद्य जनअभिरुचीनुसार सिमित तथा प्राकृतिक साधनोंद्वारा सहज तथा सुलभतासे निर्मित हुए हैं जैसे— बांस की एकतारी, चिमटा, डमरू, शंख, खंजिरी, मंजिरा, ढोल, नगारा, अलगुज, थाली, घंटा, खडताल, बीन!

प्राचीन काल में लोकसंगीत को ही देशी संगीत कहा जाता था। कुछ काल उपरांत यह देशी संगीत विभिन्न रुप धारण कर राजाओं के दरबारों में गाया जाने लगा तब उसे दरबारी संगीत भी कहा गया। जिस काल में यही देशी संगीत मंदिरों में प्रस्तुत होने लगा तब उसे हवेली संगीत नाम प्राप्त हुआ। जब यही देशी संगीत मानव समाज में प्रचलित होने लगा तब वह समाज संगीत कहलाया गया। छायापटों में प्रस्तुत यही संगीत छायासंगीत (फिल्मी संगीत)कहलाने लगा।

महाराष्ट्र के प्रचलित लोकसंगीत—

१. पोवाडा तथा लावणी—

वीर रसप्रधान पोवाडा और श्रृंगार रस प्रधान लावणी यह महाराष्ट्र के प्रमुख लोकसंगीत हैं। महाराष्ट्र में पोवाडा का उदय १७ वी शताब्दी में हुआ। पोवाडा में ऐतिहासिक घटना सामने रखकर गीत की रचना की जाती हैं। इस गीत प्रकार की रचना करनेवाले गीतकार को शाहिर कहा जाता हैं। छत्रपती शिवाजी महाराज के काल में महाराज के युध्द कौशल तथा शौर्य का यशोगान तथा जनचेतना जागृत करने हेतू पोवाडा इस लोकसंगीत का विशेष रूप से प्रयोग हुआ। परिणाम स्वरुप स्वराज्य प्राप्ती हेतू जनमानस संघटित हुआ। खुले माहोल में समुह प्रेरित करने हेतू गीतोद्वारा, कथा सुनाई जाती हैं। इस कारण उस लोकसंगीत को पोवाडा कहते हैं।

पोवाडा यह सरल, सुलभ, लय तथा स्वर मे दृत गतीसे गाया जाता हैं। पोवाडा की सांगितीक निबध्दता का सादरीकरण करते समय कथांश पूर्ण होने के बाद जी जी जी... यह सांघिक उच्चारण उच्च स्वर में होता हैं। यह वीर रसप्रधान होने के कारण विरश्री का माहोल जागृत हो कर जनमानस को प्रभावित तथा उत्तेजित करता हैं।

महाराष्ट्र लोकसंगीत की विधा 'लावणी' यह शब्द लावण्य शब्द से उत्पन्न हुआ हैं। लावण्य अर्थात सुंदरता। इस गीत प्रकार में सांगितीक आकर्षण विपुल मात्रा होता हैं। श्रृंगार रस प्रधान लावणी रसिकों के मनोवृत्ती को आवाहित करने हेतू अविष्कारित हुई हैं। पोवाडा से अधिक संगीतमय अपितु ख्याल से बहुत ही कम विस्तार का गीत ऐसा लावणी का वर्णन किया जा सकता हैं। लावणी के संदर्भ में ख्याल का उल्लेख करना विशेष रुप से क्रमप्राप्त हैं। प्रारंभिक अवस्था में लावणी यह पोवाडा गीत प्रकार के निकट होती थी। लेकिन दुसरे बाजीराव के कार्यकाल में होनाजी बाळा नामक शाहिर ने लावणी में रागदारी का प्रयोग किया। उस काल से श्रृगार रस प्रधान लावणी ख्यालप्रधान स्वरुप में पेश होने लगी। लावणी के दो प्रकार होते हैं। खडी लावणी और बैठक की लावणी। खडे लावणी में श्रृंगारिक अंगविक्षेप तथा दृष्टिक्षेप का उपयोग किया जाता हैं।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बैठी लावणी अभिनय प्रधान हैं। बैठी लावणी संथ लय, सुपरिचित राग योजना तथा अलंकारिक गायन इस गुणों से युक्त हैं। महाराष्ट्रीय लोक संगीत के अन्य विधा के तुलना लावणी का झुकाव शिष्ट संगीत की ओर दिखाई देता हैं। महाराष्ट्र के मराठी चित्रपटों में उच्चतम कोटी के लावणी का दर्शन होता हैं।

२. धनगरी ओवी—

व्युत्पत्तीशास्त्र के अनुसार 'दन' अर्थात बकरी, गाय, भैंस जैसे घरेलू पालतु जानवर। 'दन' यह शब्द कानडी भाषा से आया हैं। इन जानवरों को पालने वालों को धनगर कहते हैं। धनगर समाज में ओवी नामक लोकसंगीत प्रचलित हैं। यह गीत अहिरणी बोली भाषा में रचा जाता हैं। इस लोकसंगीत में प्रस्तुत होने वाले नृत्य में शारिरीक हलचल को विशेष प्राधान्य दिया जाता हैं। मराठी भाषा में ओवी यह छंद लोकसंगीत में उत्स्फुर्त रचना सिध्द करने हेतु उपयोग में आता हैं। ओवी छंद की विशेषता उस की रचना में अभिव्यक्त होने वाली लवचिकता तथा मार्दव हैं। धनगर लोगों के पास नैसर्गिक तालवाद्य से यह लोकसंगीत, त्यौहार के समय समुहद्वारा प्रस्तुत किया जाता हैं।

३. स्त्री गीत—

महाराष्ट्र के लोकसंगीत में स्त्री गीतो का एक लक्षणीय स्थान है। विभिन्न उत्सव तथा त्यौहारो में विविध प्रकार के स्त्री गीत समुह में नृत्य द्वारा गीतों के साथ गाए जाते हैं जैसे—डोहाळे (गोदभराई), पालना (नवजात शिशु का नामकरण), लोरी गीत, विवाह गीत, दळण कांडण गीत (अनाज पीसना तथा कुटना), क्रीडा गीत, झिम्मा, फुगडी, टिपरी नृत्य, श्रावण मास का झुला गीत इनका समावेश होता हैं। मानवी जीवन के विविध अवस्था में तथा विविध प्रसंगानुसार स्त्री गीत की विभिन्न भूमिकाएँ महत्वपूर्ण होती हैं। कारणवश लोकसंगीत में स्त्री जीवन का प्रतिबिंब प्रतित होना अनिवार्य हैं। महाराष्ट्र के लोकसंगीत पर स्त्री गीतों का गहरा प्रभाव तथा वर्चस्व दिखाई देता हैं। हाथ के तालियों से विभिन्न प्रकार के ठेके दिए जाते हैं। उपस्थित श्रोता गण भी तालियों के ठेके बजाकर गायक और नृत्य करने वाले स्त्रीयों का साथ देते हैं। परिणामस्वरुप आनंद तथा उत्साहवर्धक वातावरण की निर्मिती होती हैं। प्रतिभासंपन्न नारी समयस्फूर्तता से परिस्थिती तथा प्रसंग के अनुसार गीत की रचना करती हैं। जो मनोरंजनात्मक तथा उर्वरित नारीयों के किये प्रेरणादायी होता हैं।

४. श्रमगीत तथा कार्यगीत—

घरेलू कार्य श्रमों के लय अनुसार कुछ नारीयॉ स्वयंप्रेरणा से गीतो की रचना तथा गायन करती हैं। इसे श्रमगीत या कार्यगीत कहा जाता हैं। जैसे—मोट चलाना, खेती में बीज बोना, जुताई, फसल काटना अथवा कोई बोजा उठाना। इन कार्यों में श्रम का उपयोग होता हैं। इस लोकसंगीत

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

में स्त्रीयों सहित पुरुषों ने गाये हुए गीत भी होते हैं। यह गीत गाने से श्रम का अहसास तक नही होता!

५. संस्कार गीत—

स्त्री गीतोंमे संस्कार गीतों का एक अपना अनोखा स्थान हैं। जिसमें प्राचीन संस्कार का वर्णन होता हैं। जैसे— प्राचीन पोषाख, खानपान के पदार्थ, गहने विशेष माने जाते थे। उसकी जानकारी मिलती हैं। इन गीतो में नाट्य तथा नृत्य का अंतर्भाव होता हैं। शादी—ब्याह, जनेव आदि प्रसंगोमें गाए जाने वाले गीत संस्कार गीत नामसे पहचाने जाते हैं।

६. कथा गीत—

यह गीत कथा प्रधान होते हैं। यह गीतो में कुछ भाग गद्यप्राय और गेय होते हैं। गेय भाग तीन बार बोला जाता हैं। इस लोकसंगीत में गेय भागों का विविध रुप में अविष्कार किया जाता हैं। अंत में ध्रुवपद अपने मूल गेय रूप में गाये जाते हैं। कथा गीत स्त्री गीत प्रकार का अत्यंत मनोवेधक और मनोरंजक होता हैं। संगीत के दृष्टी से कथा गीतों में उपयोजित कल्पनाएँ विशेष होती हैं।

७. धार्मिक गीत—

भगवान की पूजा अर्चना करते समय गाए जाने वाले भजन, अभंग, गौळण, गजर, आरती इत्यादि गीत धार्मिक गीत कहलाए जाते हैं। महाराष्ट्र के संतो द्वारा रचित पद, श्लोक, भक्तीगीत, अभंड प्रचुर मात्रा में वाद्यों के साथ गाए जातेहैं।

८. नृत्य गीत—

गीत, वाद्य, नृत्य का सामाईक अविष्कार अर्थात संगीत यह संगीत की परिभाषा लोकसंगीत को सही रुप से उजागर करती हैं। गोविंद गीत, दिंडी गीत, कोळी गीत यह सभी नृत्य गीतों में समाविष्ट होते हैं। इस प्रकार के गीतो में गायन के साथ ताल, ठेका, नृत्य किया जाता हैं। लालित्यपूर्ण देहबोली इन गीतों की विशेषता हैं।

९. तमाशा—

महाराष्ट्र में गोंधळ,जागरण, वाघ्या मुरळी जैसे लोकधर्मी नाट्य अविष्कार से कुछ गुण ले कर तमाशा नामक लोकनाट्य अविष्कारित हुआ। पेशवाओं के काल में तमाशा विस्तृत रूप में लोकाभिमुख हुआ। पेशावाई पूर्व काल में शाहिरी काव्य रचयिता राम जोशी, अनंत फंदी जैसे शाहिरों के गीत तमाशा का अभिन्न अंग सिध्द हुए। तमाशा में लोकप्रिय हुए लावणी प्रचुर प्रयोग से तमाशा लोकजीवन का अंग बन गया । इसी तरह महाराष्ट्र में नंदी घुमानेवाले, बंदर का खेल करने

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वाले भराडी, डोंबारी, कोल्हाटी, गोंधळी, वाघ्या–मुरळी, वासुदेव, पोतराज जैसे कलाकारों की एक अक्षुण्ण परंपरा रही हैं।

समारोप–

महाराष्ट्र की लोकसंगीत परंपरा समृध्द तथा संपन्न हैं। मूलत: लोकसंगीत भारतीय संगीत की संजीवनी हैं। श्रमपरिहार यह लोकसंगीत निर्मिती की जननी हैं। मनोरंजन हेतु लोकसंगीत की निर्मिती हुई हैं। परिस्थितीजन्य, प्रदेशानुसार मानव के निवास परिसर की परिस्थिती, पार्श्वभूमी, मनोभूमी, आचार–विचार पध्दती का प्रतिबिंब लोकसंगीत के माध्यम से प्रकट होता हैं।

मनुष्य के उत्क्रांती तथा प्रगती के साथ उसकी जीवनशैली बदलती गई। बदलते नाट्य तथा गीत अविष्कार और तकनिक के कारण प्रचलित लोकसंगीत के असंख्य प्रकार लुप्तप्राय होने की कगार पर हैं। कुछ लोकसंगीत का आधुनिकीकरण दिखाई पडता हैं। औद्योगिक क्रांती, वैज्ञानिक प्रगती, इलेक्ट्रॉनिक मिडिया के कारण मनुष्य के जीवन को गती प्राप्त हुई हैं। शहरों का विकास तथा वृध्दी, गती से हो रही हैं। तकनिकी प्रगती जैसे विविध भारती, दूरदर्शन, उपग्रह वाहिनी के माध्यम से मनुष्य जीवन को बदल दिया। जैसे सोशल मिडिया के साधनों में वृध्दी हुई वैसे लोकसंगीत के कलाकार दुर्लक्षित होते गये। उन्हे उदरनिर्वाह तक समस्याओं का सामना करना पडा। कारणवश प्रथितयश लोककलारोंको उपजीविका निभाने के लिए कला छोडकर कुछ व्यवसाय तथा नौकरी करनी पडी। महाराष्ट्र सरकार द्वारा बीस कलमी कार्यक्रम से असंख्य कलाकारों को मदत की गई। विगत सालो में समाज भी इस सांस्कृतिक धरोहर अखंडित रखने हेतू जागृत हुए हैं। यही भावना से प्रेरित तथा लोकरंजन की आवश्यकता देखते हुए रंजक प्रधान रंगभूमी निर्माण करने का प्रयास महाराष्ट्र में किया गया। आजकल 'महाराष्ट्र की लोकधारा' नामक कार्यक्रम का आयोजन कर लोकसंगीत कलाकारों को अपनी कला पेश करने के लिए मंच उपलब्ध किए जा रहे हैं। उनके आर्थिक सहायता का प्रावधान रखा जा रहा हैं। उन्हे प्रोत्साहित किया जा रहा है। लेकिन इस प्रकार के प्रयासों की व्याप्ती बढाना आवश्यक हैं ताकि महाराष्ट्र के लोकसंगीत की समृध्द तथा समृध्द परंपरा अनादि काल तक विद्यमान रह सके।

निष्कर्श–

१. लोकसंगीत ही भारतीय संगीत की जननी तथा संजीवनी हैं।
२. महाराष्ट्र को अतिप्राचीन लोकसंगीत परंपरा हैं।
३. लोकसंगीत से प्रदेशानुसार विभिन्न गीत तथा वाद्यों के प्रकार विकसीत हुए हैं।
४. बदलते नाट्य तथा गीत अविष्कार और तकनिक के कारण प्रचलित लोकसंगीत के असंख्य प्रकार लुप्तप्राय होने की कगार पर हैं।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

५. लोकसंगीत कलाकारों को शासन द्वारा आर्थिक, प्रायोगिक सहायता करने की आवश्यकता हैं।

६. महाराष्ट्र के लोकसंगीत परंपरा अखंडित रखने हेतू सामाजिक सहभाग तथा सहयोग की नितांत आवश्यकता हैं।

संदर्भ—

महाराष्ट्राची लोकसंस्कृती— सरोजिनी बाबर

लोकसंस्कृती व साहित्य— सरोजिनी बाबर

एक होता राजा— सरोजिनी बाबर

महाराष्ट्राके लोकसंगीत—शरद व्यवहारे

लोकवाङ्मय—रुप आणि स्वरुप—शरद व्यवहारे

मराठी लोकगीत—शरद व्यवहारे

लोकसंगीत शास्त्र—अशोक रानडे

संगीत कलाविहार

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies